मोदी-योगी राज में मेहनतकश साजिदों का रोजगार छीन बेरोजगार योगेशराजों को दंगे का रोजगार देना तय...

ग्राउंड जीरो से विवेक की विशेष पड़ताल

3 दिसम्बर 2018 को तथाकथित गोकशी के खिलाफ हुई 'भीड़' की हिंसा में एक कोतवाल (इंस्पेक्टर) सुबोध सिंह तथा गांव के ही एक युवक सुमित की मौत हो गयी। एक कानून का रक्षक है तो दूसरी हिंसक भीड़ का हिस्सा बताया जा रहा है। मेन स्ट्रीम मीडिया (अखबार-टेलीविजन) में अलग-अलग कोण से खबरें प्रकाशित हो रही हैं। इसकी जांच के लिए मजदूर मोर्चा और सहयोगी दल की एक टीम ने ग्राउंड जीरो से पूरी घटना की पड़ताल की।

उस रोज की सुबह बुलंदशहर जिले के महाव गाँव के पास एक खेत में गौकशी होते हुए देखे जाने और खेतों में गायों के कंकाल देखे जाने की बात फैलाते देर नहीं लगी। कुछ देर में ही लगभग 200 से ज्यादा लोग खेतों में जमा हो गए।

कथित तौर पर गाय का कंकाल मिलने के बाद गाँव वालों के भीतर गुस्सा और उत्तेजना फैलने लगी, जिसमे हिन्दू संगठनो के स्थानीय सदस्य और कार्यकर्त्ता योगेश राज और शिखर अग्रवाल आग में घी डालने का काम कर रहे थे। धीरे-धीरे आस-पास के गाँव वाले भी वहाँ जमा होने लगे। 10 बजे तक इनकी तादात 300 से भी अधिक हो गई।

दो हत्यायों के बाद अफवाहों का बाजार गर्म हो गया। व्हाट्सएप्प और सोशल मीडिया में वीडियो आने लगे। इसी में एक विडियो जारी हुआ जिसमे कोतवाल सुबोध सिंह की लाश खेत में जीप से में लटकी पड़ी है और एक उग्र भीड़ हाथों में डंडे और हथियार लिए उधम मचाती दिखी।

जिस खेत में गौमांस मिला उसके मालिक राजकुमार की पत्नी ने बताया कि सुबह 6 बजे किसी ने राजकुमार को फोन करके बताया कि खेत में गाय कटी पड़ी है। मौके पर जा कर राजकुमार ने पुलिस चौकी चिगरावटी को सूचित किया। पुलिस की टीम मौका-ए-वारदात पर पहुँच कर मामले को शांत करने का प्रयास कर ही रही थी कि बजरंग दल से जुड़ा एक युवक योगेशराज कुछ उग्र नवयुवकों के साथ वह आ गया और गौमांस के टुकड़ों को ट्राली में इकठ्ठा कर चिगरावती चौकी पर प्रदर्शन करने लगा।

चिरावाटी पुलिस चौकी से सटे कालेज के चपरासी ने बताया कि 3 दिसम्बर को सुबह लगभग 10.30 बजे ट्रैक्टर-ट्राली में गायों के अवशेष लिए कुछ लोग पुलिस चौकी पर आ गये। उनके साथ में और भी लोग थे। उस भीड़ में कुछ लोग केसरिया झण्डा लिए और गले में केसरिया पट्टा लटकाये थे जो ''भारत माता की जय'' बोल रहे थे। पूछने पर बताया कि वे लोग बजरंग दल तथा विश्व हिन्दू परिषद के लोग थे। बजरंग दल व भाजपा युवा मोर्चा के लोग भीड़ को भड़का रहे थे। उन्होंने बताया कि एक बार तो पुलिस ने महाव गांव के कुछ लोगों के साथ मिलकर मामला शांत कर दिया था। लेकिन कुछ समय बाद ही नया बांस गांव व स्याना की ओर से एक और भीड़ आ गयी। उसमें अधिकतर कम उम्र के लड़के थे। वे हाथों में तलवार, त्रिशूल, डंडा तथा पत्थर लिए हुए थे। वहां मौजूद भीड़ में योगेश राज भी था। स्याना गांव से आयी भीड़ ने पुलिस पर हमला बोल दिया। भीड़ में से कुछ लोगों ने खड़ी गाड़ियों में आग लगा दी। गाड़ियां धूं-धूं कर जलने लगी। उस वक्त दस से पन्द्रह पुलिस वाले सहित स्याना के कोतवाल मौजूद थे। पत्थर और डंडों के हमले से पुलिस वाले घबरा गये और इधर-उधर भागने लगे। तीन पुलिस वाले कमरे में बंद हो गये थे उन्होंने कमरों की खिड़की तोड़कर कॉलेज के अन्दर जाकर अपनी जान बचाई। बाहर पत्थरबाजी के साथ गोली चलने की आवाजें आ रही थीं।

नसीरूद्दीन शाह को पकिस्तान भेजने और बम्ब से उड़ा देने की बात करने वाले टट पून्जिये नेताओं ने योगेश राज जैसे बेरोजगार गुन्डों की फौज तैयार की है जो इनके इशारों पर 200 रुपये और झंडा लेकर देश में आग लगाने का काम करते हैं। और करें भी क्यों नहीं? प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में कहा कि जनता को उन पार्टियों और नेताओं से सावधान रहने की जरूरत है जो दंगाइयों को मंत्री या सीएम् बनाती हैं। इस बार जनता को शायद मोदी की बात को गंभीरता पूर्वक लेना चाहिए।

हम लोग बगल के खेत में गये जहां कोतवाल की हत्या कर दी गयी थी तथा उनकी गाड़ी को जला दिया गया था। गाड़ी के जलने के निशान वहां मौजूद थे। चौकी पर स्याना तहसील के एक एडवोकेट मलिक साहब से मुलाकात हुई। उन्होंने बताया कि स्याना क्षेत्र से भाजपा के विधायक देवेन्द्र सिंह हैं तथा यहां के सांसद भाजपा के भोला सिंह हैं। मेरठ का सांसद भी भाजपा का है। इन्हीं विधायक और सांसद के संरक्षण में बजरंग दल व विश्व हिन्दू परिषद व भाजपा युवा मोर्चा के लोग काम करते हैं।

हमने वहां मौजूद पुलिस अधिकारी सी.ओ. सत्य प्रकाश शर्मा, वर्तमान कोतवाल किरणपाल सिंह तथा कोतवाली के सेकेन्ड पुलिस इंस्पेक्टर विरेन्द्र शर्मा से बात करने की कोशिश की। व्यस्तता का हवाला देकर पुलिस अधिकारियों ने हमें समय नहीं दिया। हमने किसी तरह एफ.आई.आर. की कापी प्राप्त कर ली। थाने में दो एफ.आई.आर. दर्ज हैं। पहली एफ.आई.आर. नम्बर-582/18 गोकशी के खिलाफ तथा दूसरी एफ.आई.आर. नम्बर-583/18 कोतवाल की हत्या के खिलाफ।

दोनों एफ.आई.आर. की कापी देखने से पता चला कि गोकशी में नामजद सात आरोपी तथा पुलिस इंस्पेक्टर सुबोध कुमार सिंह की हत्या का मुख्य आरोपी एक ही गांव 'नयाबांस' के रहने वाले हैं। नयाबांस गांव चिंगरावटी से 7 किमी. पूर्व तथा स्याना से 3 किमी. पश्चिम में है। हमारी टीम नयाबांस गांव गयी। गांव में सबसे पहले हिंसा के मुख्य आरोपी योगेश राज के घर गये। आस-पास की महिलाओं से हमने योगेश के बारे में जानने के लिए कुछ सवाल किये। औरतों में मौजूद योगेश की चचेरी बहन गीता ने बताया कि योगेश राज डेढ़ साल से बजरंग दल का जिला संयोजक है। वह सामाजिक काम करता है। योगेश एक निजी कालेज से एल.एल.बी. भी कर रहा है।

गाँव के लोगों से बात करने पर गौकशी के तीन आरोपियों (सफरुद्दीन, अनस और साजिद) को छोड़कर अन्य चार के बारे में किसी से कुछ मालूम नहीं चल सका। चौंकाने वाली बात ये है कि इनमे से अनस और साजिद की उम्र 11 एवं 12 वर्ष ही थी। पहले पुलिस इन्ही बच्चों को थाने ले गई परन्तु बात बिगडती देख फिर बच्चों को छोड़ दिया गया। इतने तक पुलिस कार्यवाही करती दिख रही है पर इसके बाद पुलिस जो हुआ उसमे पुलिस कार्यवाही कम और खानापूर्ति करती पायी गई।

क्योंकि अनस और साजिद दो नाबालिक बच्चे निकले इसलिए मजबूरन उनको छोड़ने के बाद पुलिस ने गाँव में लोगों से पता करने के प्रयास में जाना कि साजिद नाम का एक अन्य लड़का इसी गाँव का है जो करीब 12 वर्षों से गाँव छोड़ कर फरीदाबाद के बडकल गाँव में रहता है। बस फिर क्या था पुलिस ने साजिद और उसके भाई शराफत को फरीदाबाद से बुला कर गिरफ्तार कर लिया। करीब 3 दिन कैद में बिताने के बाद शराफत को छोड़ दिया गया पर शाजिद को लगभग 20 दिनों के बाद ही छोड़ा गया।

साजिद के पिता शाबिर खान से बड़कल फरीदाबाद में मिलने पर उन्होंने बताया कि 3 दिसम्बर को इस्तेमा में शामिल होने के लिए अपने पांच बेटों समेत 12 लोग फरीदाबाद से बुलंदशहर गए। क्योंकि वह लगभग 10 लाख लोग आये हुए थे तो उन्होंने अपनी गाड़ी सड़क पर ही खड़ी कर इस्तेमा में शिरकत की। दोपहर 3 बजे फरीदाबाद वापस आने के लिए उन्होंने भीड़ के कारण दनकौर होते हुए यमुना एक्सप्रेसवे से आना बेहतर समझा।

4 दिसम्बर की सुबह थाना शाना कोतवाल अल्ताफ अंसारी का फोन शाबिर खान को आया कि अपने दोनों बेटों को लेकर थाने पर हाजिर हों। शाबिर ने माजरा जानने के बाद अंसारी को कहा कि वो और उनके पांचो बेटे तो इस्तमा में थे और यदि कोतवाल साहब चाहें तो विडियो फुटेज के साथ उनके मोबाइल की लोकेशन जांच लें। परन्तु अंसारी ने कहा कि ये सब बाद के जांच के विषय हैं, उससे पहले आप इनको थाने में हाजिर करो। शाबिर खान जो कि दिल के मरीज हैं अपने दोनों बेटों साजिद और शराफत और पडोसी नूर मोहम्मद के साथ थाना शाना पहुंच गए।

12.30 बजे से शाम 5 बजे, 4 दिसम्बर को अंसारी के साथ दो अन्य कोतवालों ने साजिद से पूछताछ के बाद उसे छोड़ दिया। पर ज्यों ही बुलंदशहर से एक घंटे की दूरी तय कर खान अपने दोनों बेटों के साथ फरीदाबाद के लिए बढ़ रहे थे कोतवाली से फिर फोन आ गया कि साजिद को बुलंदशहर में ही रुकना है। असमंजस की स्थिति में शाबिर खान अपने बेटे साजिद के साथ एक रिश्तेदार के पास रुक गए पर बड़े बेटे शराफत को फरीदाबाद भेज दिया क्योंकि उसकी पत्नी को बेटी पैदा हुई थी सो उसकी देखभाल के लिए शराफत का होना जरूरी था।

अगले दिन 5 दिसम्बर को शाबिर खान नगरपालिका से जुड़े एक स्थानीय नेता रहीस मलिक से मिले और उनसे मामले में हस्तक्षेप करने की गुहार की। मलिक ने कोतवाल अंसारी को घर पर ही बुला लिया और माजरा समझा जिसमे कोतवाल अल्ताफ अंसारी के अनुसार फिलहाल तो उनको सबका चालान करना ही पड़ेगा बाकी जांच में जो निकलेगा उसपर निर्भर करता है। इतना कहने के बाद साजिद को गिरफ्तार कर लिया गया और साथ ही गाँव के सरफुद्दीन एवं औरंगाबाद के बच्चे खान नामक एक बुजुर्ग को भी गिरफ्तार कर चालान कर दिया गया।

साजिद के बड़े भाई शराफत ने बताया कि शाम को साजिद से मिल कर अपने पिता एवं परिवार सहित जब वे वापस अपनी में गाड़ी में बैठ रहे थे तो पुलिस की एक अन्य टीम ने सबको पकड़ लिया। अपना कुसूर पूछने पर पुलिस वालों ने कहा कि हम जानते हैं कि आप सभी बेकसूर हैं पर फिलहाल हम पर दबाव है और हम भी मजबूर हैं। दो रात और तीन दिन हिरासत में रखने के बाद शराफत को छोड़ दिया गया परन्तु साजिद को नहीं छोड़ा गया।

इन सबके बीच योगेश राज फरार चल रहा था जो अब पकड़ा जा चुका है और साजिद भी अपने घर बड़कल फरीदाबाद वापस आया गया है। पर साजिद का जीवन वैसा ही नहीं रहा जैसा कि गिरफ्तारी से पहले था। साजिद खान ने कहा कि जब कुंए में गिरेंगे तो सूखे नहीं निकलेंगे। साजिद कोल्ड ड्रिंक्स के होलसेल का धंधा करते थे और उसके लिए एक दुकान भी ले रखी थी। गिरफ्तार होने के कारण काम चौपट हो गया।

शराफत ने बताया कि जिस योगेश राज ने भीड़ को भड़काया उसके घर की माली हालात कोई बहुत अच्छी नहीं है। क्योंकि अब से 10 वर्ष पहले तक शाबिर खान का परिवार भी उसी गाँव में रहता था तो वहाँ का हर आदमी उनको जानता है। योगेश के परिवार का पुराना सम्बन्ध है इस तरह के दंगों से पर इसका मतलब कत्तई ये नहीं कि गाँव में हिन्दू मुस्लिम सौहार्द नहीं है। करीब 40 हिन्दू और 20 मुस्लिम परिवारों ने साजिद के लिए लिख कर दिया कि हमारा इस प्रकार की किसी गतिविधि से कोई ताल्लुक नहीं। ये कोई मामूली सहयोग नहीं।

अब सवाल है कि अंग्रेजी पुलिस का स्वरूप भारतीय जनता में डर को बनाये रखने के लिए था। पर क्या योगी-मोदी के राज में जहाँ रामराज्य की लफ्फाजियां गढ़ी जाती हैं पुलिस ऐसे ही बेगुनाहों को फसाती रहेगी? एनकाउंटर का फर्जीवाड़ा करते करते पूरा महकमा दागदार हो गया है।

ऐन पुलिस चौकी के सामने 'ओयो' होटल का सेक्स धंधा

फ़रीदाबाद (म.मो.) सैक्टर 8 के निवासियों को उद्योग मंत्री विपुल गोयल कहते हैं कि रिहायशी मकानों के बीच गैस्ट हाउस व अन्य व्यवसायिक कारोबार नहीं चलने दिये जायेंगे। लेकिन वास्तव में भ्रष्ट अधिकारियों की सांठ-गांठ से लगभग सभी सेक्टरों में गैस्ट हाउसों का धंधा खूब चल रहा है। एस्टेट अफ़सर कहता है कि उन्हें कोई शिकायत मिलेगी तो वे कार्यवाही करेंगे, पुलिस कहती है कि व्यापारिक गतिविधियां रोकना उनके अधिकार क्षेत्र में नहीं है। परन्तु इन सब से मंथली व हफ़्ता वसूली के लिये कोई किसी से पीछे नहीं रहना चाहता। इसी सम्बन्ध में 'मज़दूर मोर्चा' के 18-24 मार्च 2018 के अंक में जो खबर प्रकाशित की गयी थी उसे ज्यों का त्यों फ़िर से प्रकाशित किया जा रहा है, क्योंकि धंधा ज्यों का त्यों चालू है।

सेक्टर 21 ए व 21 बी की विभाजक सड़क पर, सेक्टर 21 ए में कोठी नम्बर 325 कानून के अनुसार एक रिहायशी दो मंजिला इमारत है। लेकिन कानून की उल्लंघना करके एक हज़ार गज में बनी इस कोठी में 'ओयो' होटल एवं रेस्तरां चलाया जा रहा है। केवल होटल एवं रेस्तरां ही चलता रहता तो भी आस-पास के लोग इसे बर्दाश्त कर लेते, परन्तु वहां सुबह 10 बजे से शाम के 4 बजे तक लड़कियों व लड़कों का जो आवारा तांता लगा रहता है, उससे इन सैक्टरों के निवासी बेहद परेशान हैं।

लगभग सभी लड़कियां किसी न किसी स्कूल की ड्रेस में होती हैं तथा मैट्रो रेल से आती हैं। इन्हें मैट्रो रेल स्टेशनों से होटल तक लाने के लिये होटल की ओर से बाकायदा मोटर साइकिलों व एक-दो ऊबर टैक्सियों को स्थाई तौर पर रखा गया है। अनुमान है कि स्थानीय लड़कियों के अलावा दिल्ली के स्कूलों तक से लड़कियां यहां नियमित रूप से लाई जाती हैं।

होटल के एक भीतरी सूत्र के अनुसार ये लड़कियां औसतन एक से दो घंटे ही रुकती हैं। इनके लिये ग्राहक होटल में पहले से ही तैयार रहते हैं। विश्वसनीय सूत्र के मुताबिक लड़की को 1500 रुपये प्रति घंटे के हिसाब से पेमेंट होती है तथा कमरे का किराया 2000 रुपये (एक घंटे का) वसूला जाता है।

करीब दो-ढाई साल से चल रहा यह धंधा जब अच्छा जम गया और ग्राहकों की संख्या के मुकाबले कमरे कम पड़ने लगे तो पड़ोस में ही एक और कोठी नं. 530 भी किराये पर ले ली गयी। अक्सर ग्राहक रूपी लड़के भाड़े के 'पार्टनर' की प्रतीक्षा में पास के पार्क में भी बैठे रहतेहैं।

यह सारा धंधा होटल से मात्र 50 मीटर के फ़ासले पर स्थित पुलिस चौकी के ठीक सामने चलता रहता है। भरोसेमंद सूत्र का यकीन करें तो होटल द्वारा चौकी को 60, 000 रुपये मासिक केवल अपनी आंखें बंद रख कर चुप रहने के लिये दिये जाते हैं। चौकी के ही एक पुलिसकर्मी को यह कहते सुना गया कि इस बेकार सी चौकी में इसके अलावा और तो कोई कमाई का साधन है भी नहीं।

इलाके (बड़खल) की विधायक सीमा त्रिखा का घर भी इस होटल से करीब एक-डेढ किलोमीटर के फ़ासले पर है। स्थानीय लोग़ों ने इस सैक्स अड्डे की शिकायत उनसे भी की थी, लेकिन कोई बात नहीं बनी तो आरडब्लूए (रेजिडेंट वैलफ़ेयर एसोसिएशन) के प्रधान गजराज नागर से शिकायत की। नागर ने कई बार थाना एनआईटी के प्रभारी व अतिरिक्त प्रभारी को फ़ोन पर सारे मामले से अवगत कराया लेकिन निकले ढाक के वही तीन पात। रिहायशी इलाके में व्यापारिक गतिविधि चलाने के विरुद्ध नागर ने 'हूडा' विभाग में भी शिकायत की तो वहां भी कोई सुनवाई नहीं होने पर उन्होंने स्थाई लोक अदालत में केस डाल रखा है। अदालती प्रक्रिया जैसे चलती है 6 माह से चल रही है।